निवेदन—

समान में भ्रमण करने के कारण समय न मिलने से
हम इस ग्रथ का विशेष सशोधनादि कार्य
निलकुल न कर सके। अतएव
बहुतसी त्रुटियाँ का होना सभव है।
पाठकों से क्षमा प्रार्थना करते हुये,
निवेदन करते हैं कि इस में
हमारी अल्पज्ञता वश
जो भा त्रुटिया हों
सुधार कर
अनुगृहीत
करें।

—ब्र० जय

निवेदन—

समाज में भ्रमण करने के कारण समय न मिलने से
हम इस ग्रंथ का विशेष संशोधनादि कार्य
बिलकुल न कर सके। अतएव
बहुतसी त्रुटियों का होना संभव है।
पाठकों से क्षमा प्रार्थना करते हुये,
निवेदन करते हैं कि इस में
हमारी अल्पज्ञता वश
जो भी त्रुटियां हों
सुधार कर
अनुगृहीत
करें।

—ब्र० जय

श्री पंडित-पूजा ।

॥ वन्दे श्री गुरु तारणम् ॥

श्री १००८ श्री परम गुरु तारण तरणाचार्य विरचित -

पंडित-पूजा

❀ मगलाचरण ❀

ॐकारस्य उर्धस्य, उर्ध्द सद्भाव शाश्वत ।
विन्दस्थानेन तिष्ठन्ति, ज्ञान मय शाश्वत ध्रुवं ॥ १ ॥

शुद्धातम का प्रबोध कर्ता,
ओं पद ब्रह्माक्षर गाया ।
वह पद शुद्ध ऊर्ध्व गामी का,
शिवपुर ठाम अचल गाया ॥

विन्दस्थान कहें उसको ही,
वहीं रहे यह चेतनराय ।
जिनकी ज्ञानमयी शुभ सपद,
अक्षय रूप रही निजमाय ॥१॥

* शुद्रात्मा ३ा नमस्कार *

नय निश्चय जानन्ते, शुद्र तत्व विधीयते ।
ममात्मा गुण शुद्ध नमस्कार शाश्वत ध्रुव ॥ २ ॥

जो नर निश्चय नय को जाने,
वही तत्व को पहिचाने ।
निज आतम ही शुद्ध गुणोकर,
युक्त यही निश्चय माने ॥

ऐसे शुद्ध निजातम को,
निज अनुभव में लावो प्राणी ।
वही शाश्वता रूप अटल है,
नमस्कार करते ज्ञानी ॥ २ ॥

* ओंकार-देव-पूजा *

ओंनम वन्दते योगी सिद्ध भवति शाश्वत ।
पण्डितो मोपि जानते, देवपूजा निरीयते ॥ ३ ॥

ओं पद को वदन करते हैं,
अनुभव भी करते योगी ।
फिर पाते हैं सिद्ध गती को,
शाश्वत निज सुख के भोगी ॥

जो जन इस पद को जानेंगे,
पंडित वही कहावेंगे ।
वही देव की पूजा विधि,
फिर शुद्ध रूप कर पावेंगे ॥ ३ ॥

* ह्रींकार-पूजा *

ह्रींकार ज्ञान उत्पन्न, उनकार च वन्द्यते ।
अर्हं सर्वज्ञ उक्त च, अचक्षु दर्शन दृश्यते ॥ ४ ॥

ह्रींपद से चौवीसों जिनवर,
अनुभव में आजाते हैं ।
ओंकार से शुद्ध रूप वा,
पच परम पद भाते हैं ॥

नमस्कार है शुद्ध रूप को,
जो जिनवर ने गाया है ।
चर्म चक्षु से नहि दीखे जो,
अचक्षु मनमे भाया है ॥ ४ ॥

* ज्ञान - पूजा *

मति श्रुतस्य सम्पूर्णं, ज्ञान पच मय ध्रुव ।
पडितो सोऽपि जानन्ते, ज्ञान शास्त्र सपूज्यते ॥ ५॥

मति श्रुत अवधि ज्ञान मनपर्जय,
केवल ज्ञान अचल जो हैं।
पडित जन इन ज्ञानों को,
निज अनुभव में जाने शोभें ॥

यही ज्ञान मय शास्त्र जिनेश्वर,
वाणी की पूजा कहिये।
इस सम्यक् पूजा को निशदिन,
भविजन तुम करते रहिए ॥ ५ ॥

* देव-शास्त्र गुरु-पूजा *

ऊं ह्रिय श्रियधार, दर्शन च ज्ञान गुरु।
देव श्रुत गुरु चरण, धर्म मङ्गार शाश्वत ॥ ६ ॥

ऊंकार ह्रींकार तथा श्रींकार,
यही पद उत्तम है।
सम्यग्दर्शन तथा अटल निज,
सम्यग्ज्ञान सदुत्तम है ॥

सच्चे देव शास्त्र गुरु के,
चरणों में निशदिन ही रहना।
सच्चे शाश्वत दयामयी
जिन धर्म मार्ग को ही गहना ॥ ६ ॥

* पंडित कैसे हों ? *

वीय अकुरण शुद्ध, त्रैलोक लोकित ध्रुव ।
रत्नत्रय मय शुद्ध, पण्डितो गुण पूज्यते ॥ ७ ॥

आत्म शक्ति का शुद्ध वीर्य,
जिनने निजमें अकुरित किया ।
तीन लोक को देखा उनने,
रहा नहीं सकुचित हिया ॥

रत्नत्रय मे शुद्ध होय जो,
पण्डित जन गुण के सागर ।
वही पूज्य गुण युक्त कहावे,
जाय शीघ्र शिव वनिता घर ॥ ७ ॥

* ज्ञान - स्नान *

देव श्रुत गुरु वन्दे, धर्म शुद्ध च वन्दते ।
ति अर्थ अर्थ लोक च, स्नान च शुद्ध जल ॥ ८ ॥

देव शास्त्र गुरु को वन्दू मैं,
तथा धर्म को नमन करू ।
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरित यह,
तीन अर्थ नित मनन करू ॥

यही शुद्ध जल है जिसमें,
नित न्हवन करो भविजन ज्ञानी ।
तव होगा ससार पार यह–
ही हमने निश्चय जानी ॥ ८ ॥

* ज्ञान-स्नान *

चेतना लचणो धर्मो, चेतयति सदा वुधै ।
ध्यानस्य जल शुद्ध, ज्ञान स्नान पडित ॥ ६ ॥

चेतन के लक्षण कर मडित,
शुद्ध धर्म को कहते है ।
जिससे नितही बुद्धिमान जन,
सावधान सब रहते हैं ॥

शुद्ध ध्यान मय जल पवित्र है,
ज्ञानीजन स्नान करो ।
जिससे यह ससार भवोदधि
मांहि सेति तुम शीघ्र तरो ॥ ६ ॥

❀ ज्ञान - स्नान ❀

शुद्ध तत्त्व च वेदन्ते, त्रिभुवन ज्ञानेश्वरम् ।
ज्ञान मय जल शुद्ध, स्नान ज्ञान पण्डित ॥ १० ॥

शुद्ध तत्व को जाना उनने,
जो त्रिभुवन के ईश हुये ।
ज्ञान मयी जल मे स्नान कर,
वे प्रभुवर शुभ शुद्ध हुये ॥

शुद्ध ज्ञान मय जल पवित्र है,
ज्ञानीजन स्नान करो ।
जिससे यह ससार भवोदधि,
मांहि मेति तुम शीघ्र तरो ॥१०॥

* ज्ञान - सरोवर *

सम्यक्त्वस्य जल शुद्ध, सम्पूर्ण सर पूरित ।
स्नान पिवति गणधरण, ज्ञान शरणत ध्रुव ॥ ११ ॥

सम्यक्दर्शन जल पवित्र,
सम्पूर्ण रूप से रस पूरित ।
जिस निज आतम सरवर में,
है भरा स्वाद रस मय पूरित ॥

गणधर देवों ने उस जल में,
न्ह्वन किया वा पान किया ।
उस जल का ही शरण गहो,
तुम जो चाहो संतोष लिया ॥ ११ ॥

* आत्मदेव का प्रचालन *

कपाय चतु अनतान, पुण्य पाप प्रचालित ।
प्रचालित कर्म दुष्ट च, ज्ञान स्नान पडित ॥ १४ ॥

चार चौकडी कपाय की है,
तथा पुण्य वा पापों को ।
प्रक्षालन कर शुद्ध होय,
फिर दूर करो सतापो को ॥

प्रचालन कर दुष्ट कर्म को,
ज्ञान मयी स्नान करो ।
जिससे यह ससार भवोदधि,
माहि सेति तुम शीघ्र तरो ॥ १४ ॥

* निश्चय नय के वस्त्र *

प्रचालित मन चपल, त्रिविधि कर्म प्रचालि १ ।
पडितो वस्त्र मयुक्त, आभरण भूपण क्रियते ॥ १५ ॥

अति चचल मर्कट मम जो मन,
उसे शुद्ध प्रचालन कर ।
द्रव्य कर्म, नो कर्म, भाव मय,
कर्म, इन्हे प्रचालन कर ॥

अव आभूपण वस्त्र तुम्हें,
कैसे धारण करना चहिये ।
यह गुरु सीख सुनो हे प्राणी,
भव समुद्र तरना चहिये ॥ १५ ॥

* निश्चय नय के वस्त्राभरण *

वस्त्र च धर्म सद्भाव, आभरण रत्नत्रय।
मुद्रिका सम मुद्रस्य, मुकुट ज्ञान मय ध्रुव ॥ १६ ॥

दश लक्षण जो धर्म बताये,
उनके वस्त्र बना पहरो।
तीन रतन के गहने गढकर,
उनको प्रीति सहित पहरो ॥

निज मुद्रा को शांत बनालो,
यही जानलो शुभ मुदरी।
ज्ञान मुकुट को धारण करके,
वरलाओ तुम शिव सुन्दरी ॥ १६ ॥

* आत्म-दर्शन *

दृष्टिव शुद्ध दृष्टि च, मिथ्या दृष्टि च तिक्तय।
असत्य अनृत न दृष्टन्ते, अचेत दृष्टि न दीयते ॥ १७ ॥

जिनने देखी शुद्ध दृष्टि को,
मिथ्य दृष्टि का त्याग किया।
असत्य मिथ्या न देख करके,
शुद्ध रूप पर ध्यान दिया ॥

अचेत कहिये जड स्वरूप जो,
वस्तु कोई भी हो जग में।
सम्यक्त्वन्त जीव है सोई,
दृष्टि न देवे उस मग मे ॥१७॥

* आत्मदर्शन *

दृष्टित शुद्ध समय च, सम्यक्त्व शुद्ध ध्रुव ।
ज्ञान मय च सम्पूर्ण, मगल दृष्टि सदा बुधै ॥ १८ ॥

जिसने देखा शुद्ध समय को,
अटल शुद्ध सम्यक्त्व वही ।
ज्ञानमयी है पूर्ण वही है,
विज्ञ वही शुभ दृष्टि वही ॥

शुद्ध समय का अर्थ यही है

इसको

* २५ दोष त्याग *

लोक मूढ़ न दृष्टन्ते, देव पाखंडि न दृष्टते ।
अनायतन मदाष्ट च, शंका अष्ट न दृष्टते ॥ १६ ॥

इस गाथा में समकित के,
पच्चिस दोषों का नाम कहा ।
तीन मूढता अनायतन षट्,
अष्ट मदों का नाम कहा ॥

शंकादिक आठों दोषों को,
सम्यग्दृष्टि न धरते हैं ।
ऐसे इन पच्चिस दोषों से,
भव्यजीव ही डरते हैं ॥१६॥

* आत्म दर्शन *

दृष्टित शुद्ध पद साधं, दर्शन मल विमुक्तय ।
ज्ञान मय शुद्ध सम्यक्त्व, पण्डितो दृष्टि सदा बुधे ॥२०॥

उपर्युक्त पच्चिस मल से जो,
रहित आत्म पद का श्रद्धान ।
वही ज्ञानमय शुद्ध कहा,
सम्यक्त्व नाम ताका अभिराम ॥

बुद्धिवान पण्डित पुरुषों की,
दृष्टि उसी पर रहती है ।
वही दृष्टि तुमभी करलो भवि,
यह जिनवाणी कहती है ॥२०॥

* आत्मदर्शी-पुरुष *

वेदकाग्रस्थिरश्चैव, वेदन्ति निर्ग्रंथ ध्रुवम् ।
त्रैलोक्य समय शुद्ध, वेद वेदान्त पण्डित ॥२१॥

ज्ञाताओं मे अग्र बुद्धि,
निर्ग्रंथ दिगम्बर ने जाना ।
तीन लोक में सार समय जो,
शुद्ध रूप है सुख थाना ॥

वेद और वेदान्तों में सब,
पण्डित जन यों कहते हैं ।
सार समय सम्यक्त्व और,
सब झूठा झगड़ा करते हैं ॥२१॥

* निश्चय पंडित पूजा *

उच्चरण ऊर्ध शुद्धच, शुद्ध तत्वच भावना ।
पण्डितो पूज्य आराध्य, जिन समयच पूजित ॥२२॥

उच्चारण अरु शुद्ध भावना,
शुद्ध तत्व को ही धरना ।
यही पूज्य की पूजा अरु,
आराधन निशदिन ही करना ॥

जिन जीवों को ऐसा यह,
जिनवर का आराधन भाया ।
उनने श्री जिनवर को मानो,
साक्षात में ही पाया ॥२२॥

* निश्चय पूजा *

पूजित न जिन उक्त, पंडितो पूजितो सदा ।
पूजित शुद्ध मार्ध च, मुक्ति गमन च कारणम् ॥२३॥

जिनवर ने जो कहा शुद्ध
पूजा पंडित जन नित्य करें ।
इस पूजा मे पूजक जन भी,
निज शिव लक्ष्मी को प्राप्त करें ।

इसही पूजा को तुम धारो,
निज स्वरूप का ज्ञान करो ।
छोडो जड पूजा को प्रियवर,
निश्चय से शिव गमन करो ॥२३॥

* ससार वर्द्धक जड़ पूजा निषेध *

—:*:—

अदेव अज्ञान मूढच अगुरु अपूज्य पूजित ।
मिथ्यात्व सकल जानन्ते, पूजा ससार भाजन ॥२४॥

अज्ञानी अति मूढ मनुज ही,
अगुरु अदेवों को पूजे ।
यह मिथ्यात्व अनादी से ही,
जग कारण सबको सूझे ॥

जिसमें नहीं देव गुरु का,
लक्षण किंचित पाया जाता ।
वह अदेव अरु अगुरू कहा है,
यही भाव की यह गाथा ॥२४॥

❀ पंडित पूजा ❀

तेनाह पूज शुद्धच, शुद्ध तत्त्व प्रकाशक ।
पंडितो वदना पूजा, मुक्ति गमन न संशय ॥२५॥

तत्त्व प्रकाशक पूजा की यह,
कथनी इसी लिये की है ।
पण्डित जन हो ! पूजो, वंदो,
पूजा की यह रीती है ॥

इस पूजा से मोक्ष प्राप्त हो,
इसमें नहिं संशय लाना ।
भूल न जाना भव्यजीव,
सब शिव मारग को ही जाना ॥२५॥

* पूज्य पूनक कैसे हों *

प्रति इन्द्र प्रति पूर्णस्य, शुद्धात्मा शुद्ध भावना ।
शुद्धार्थं शुद्ध समय च, प्रति इन्द्र शुद्ध दृष्टित ॥२६॥
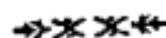
शुद्धात्मा की शुद्ध भावना,
तथा उक्त वस्त्राभूषण ।
धारण कर तुम इन्द्र सदृश हो,
गुण धारो त्यागो दूषण ॥

शुद्ध अर्थ जो शुद्ध समय है,
उसकी पूजन तुम करना ।
तव ही शुद्ध इन्द्र सम हो,
तुम यह निश्चय मनमें धरना ॥२६॥

* पूजक के गुण *

दातारो दान शुद्ध च, पृजा आचरण सयुक्त ।
शुद्ध सम्यक्त्व हृदययस्य, स्थिर शुभावना ॥२७॥

पूजा शुद्धाचरण आदि से,
जो दाता अति शुद्ध हुआ ।
तथा दान भी शुद्ध और,
सम्यक्त्व हृदय मे पूर्ण हुआ ॥

शुद्ध भावना स्थिर मनसे,
सत्पात्रों मे दान करो ।
मोक्षमार्ग का कारण है वह,
यह मनमे श्रद्धान [illegible] २७॥

* सच्चे पूज्य पूजक *

शुद्ध दृष्टी च दृष्टते, सार्धं ज्ञान मय ध्रुव ।
शुद्ध तत्व च आराध्य, वदना पूजा विधीयते ॥२८॥

ज्ञानमयी जो शुद्ध दृष्टि है,
यह पूजा वे ही करते ।
शुद्ध तत्व का आराधन भी,
निज मनमें वे ही धरते ॥

इस पूजा से मोक्ष प्राप्त हो,
इसमें नहिं संशय लाना ।
भूल न जाना भव्यजीव सब,
शिव मारग में ही जाना ॥२८॥

* पडित पूजा का प्रमाण *

सघस्य चत्रु सघस्य, भावना शुद्धात्मन ।
समव शरणस्य शुद्धस्य जिन उक्त सार्धं ध्रुव ॥२६॥

समव शरण बारह कोठा में,
चार सघ के मध्य रहा ।
जिनवर ने उपदेश दिया था,
असंख्यात थे जीव [illegible] ।

शुद्धात्मा को भावो जीवो !
सदा भावना [illegible] ।
होगा भव भय दु:ख दूर [illegible]
सुन [illegible] मे ॥२६॥

* व्यवहार श्रद्धा *

सार्द्धं च सप्त तत्वान, द्रव्यकाया पदार्थक।
चेतना शुद्ध ध्रुव निश्चय, उक्तति केवल जिन ॥२०॥

सप्त तत्व नव पदार्थ वा,
पट द्रव्यों का श्रद्धान करो।
निज स्वरूप का निश्चय करके,
शिव नगरी को गमन करो॥

यह उपदेश जिनेश्वर का है,
इसको धारो हे प्राणी।
होगा भव भय दूर सभी का,
बन जाना दृढ श्रद्धानी ॥३०॥

* हेय उपादेय शिक्षा *

मिथ्या तिक्त तृतीय च, कुज्ञान त्रति तिक्तय ।
शुद्ध भाव शुद्ध समय, मार्ध भव्य लोकय ॥२१॥

मिथ्या प्रकृति तीन अरु तीनों,
कुज्ञानों का त्याग करो ।
शुद्ध भाव से शुद्ध समय का,
भव्यजीव श्रद्धान करो ॥

यह उपदेश जिनेश्वर का है,
इसको धारो हे प्राणी ।
होगा भव भय दूर सभी का,
वन जाना दृढ़ श्रद्धानी ॥२१॥

* उपसंहार *
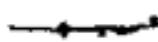
एतत्सम्यक्त्व पूज्यस्य पूजा पूज्य समाचरेत् ।
मुक्ति श्रिय पथ शुद्ध, व्यवहार निश्चय शाश्वत ॥ ३२॥
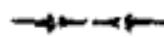
यह सम्यक्त्व पूज्य पूजा को,
पूजो हे भविजन प्राणी।
निश्चय वा व्यवहार मार्ग यह,
यही कहे श्री जिनवाणी ॥

बस यह पंडित पूजा की,
बत्तिस गाथा का अर्थ हुआ ।
पढो पढावो शुद्ध करो यह,
ग्रन्थ पूर्ण अरु सार्थ हुआ ॥३२॥

इति

श्री मालारोहण ।

॥ तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

श्री १००८ श्री परमगुरु तारण तरणाचार्य विरचित

माला रोहण

* भाषा–पद्यानुवाद *

* मंगला चरण *

ओंकार वेदान्त शुद्धात्म तत्व,
प्रणमामि नित्य तत्वार्थ सार्धं ।
ज्ञान मयो सम्यग्दर्शनेत्व,
सम्यक्त्व चरण चैतन्य रूप ॥१॥

ओंकार शुद्धात्म तत्व है,
सब वेदों का सार यही ।
नित्य नमू उस पद को मैं,
धर हृदय बीच श्रद्धान सही ॥
ज्ञान मयी सम्यग्दर्शन से,
शोभित है चारित्र मयी ।
शुद्ध चेतना के द्विभेद हैं,
दर्शन ज्ञान स्वरूप मयी ॥१॥

❀ महावीर स्वामी को नमस्कार ❀

नमामि भक्त श्री वीरनाथ,
नत चतुष्ट त व्यक्त रूप।
माला गुण वोच्छति त प्रबोध,
नमाम्यह केवलि नत सिद्ध ॥२॥

भक्ति भाव से वीरनाथ जिन-
वर को वदन मैं करता।
चार चतुष्टय स्वरूप जिनका,
प्रगट रूप के जो धरता॥
माला रोहण ग्रन्थ भव्य-
जीवों के हित कारण गाऊ।
श्री जिन, केवलि तथा सिद्ध जो,
नत हुए उनको ध्याऊ॥२॥

* आत्म-स्वरूप *

काया प्रमाण त ब्रह्म रूप,
निरजन चेतन लषणेत्व।
भावे अनेत्व जे ज्ञान रूप,
ते शुद्ध दृष्टी सम्यक्त्व वीर्यं ॥३॥

जीव द्रव्य कैसा है इसका,
तुम आकार सुनो भाई।
अपनी काया के प्रमाण वह,
ब्रह्म रूप निर्मल गाई॥

चेतन के लक्षण मय इसको,
जो ज्ञानी निजमें भाते।
वही शुद्ध दृष्टि है जग मे,
शुद्ध शक्ति को वे पाते ॥३॥

* शुद्धदृष्टि - स्वरूप *

ससार दु ख जे नर विरक्त,

ते समय शुद्ध जिन उक्त दृष्ट ।

मिथ्यात्व मद मोह रागादि खंड

ते शुद्ध दृष्टी तत्वार्थ सार्धं ॥४॥

दुःख मयी समार रूप से,

जो नर विरक्त होते हैं।

जिनवर कथित शुद्ध चेतन के,

स्वरूप को वे जोते हैं ॥

मिथ्या मद वा मोह राग आदिक,

को खडन वे करते ।

शुद्ध दृष्टि हैं वही तत्व-

श्रद्धान सदा जो नर धरते ॥४॥

* शुद्ध-स्वरूप *

शल्य त्रय चित्त निरोध नेत्व,
जिन उक्त वाणी हृदि चेत नेत्व ।
मिथ्यात्व देव गुरु धर्म दूर,
शुद्ध स्वरूप तत्वार्थ सार्धं ॥५॥

तीन शल्य को दूर करो निज,
हृदय बीच जिन वचन धरो ।
मिथ्या देव गुरु को त्यागो,
कुधर्म को तुम दूर करो ॥

शुद्ध स्वरूप कहा चेतन का,
उसकी तुम श्रद्धा धरना ।
श्री जिन तारण तरण गुरू का,
यह उपदेश मनन करना ॥५॥

* सम्यग्दृष्टि-कर्तव्य *

जे मुक्ति सुक्ख नर कोपि सार्धे,
सम्यक्त्व शुद्ध ते नर धरेत्व ।
रागादयो पुण्य पापाय दूर,
ममात्मा स्वभाव ध्रुव शुद्ध दृष्टि. ॥६॥

मोक्ष महल के निजानन्द की,
जिनको चाह लगी मन में ।
शुद्ध रूप सम्यक्त्व धरें वे,
यही कहा जिन वचनन में ॥
रागादिक वा पुण्य पाप से,
सदा दूर रहना ज्ञानी ।
निज आतम ध्रुव शुद्ध दृष्टि,
तुम अनुभव में लाना ध्यानी ॥६॥
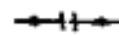
* शुद्धात्म-स्वरूप *

श्री केवल ज्ञान विलोक तत्व,
शुद्ध प्रकाश शुद्धात्म तत्व ।
सम्यक्त्व ज्ञान चरण च सौख्य,
तत्वार्थ सार्द्ध त्व दर्शनेत्व ॥७॥

जिनेन्द्र ने जिन तत्वों को,
देखा है केवल ज्ञान मझार ।
शुद्धातम का प्रकाश कीना,
भविजन लेना उसको धार ॥

तत्वों को श्रद्धा करके भवि–
रत्नत्रय सुख को धरना ।
श्री जिन तारण तरण गुरू का,
यह उपदेश मनन करना ॥७॥

सम्यग्दृष्टि-कर्तव्य

सम्यक्त्व शुद्ध हृदय समस्त,
　　तस्य गुणमाला गुथितस्य वीर्यं ।
देवाधि देव गुरु ग्रन्थ मुक्त,
　　धर्मं अहिंसा क्षिम उत्तमध्य ॥८॥

सम्यग्दर्शन शुद्ध हृदय में,
　　पूर्ण रूप धरना चहिये ।
उसकी गुणमाला को भविजन,
　　अब गुथन करना चहिये ॥

जिनवर देव गुरू ग्रंथों से,
　　रहित होय वर मान्य सही ।
धर्म अहिंसा क्षमा मयी हो,
　　जिसमें नहीं विरोध कहीं ॥८॥

* शुद्धात्मा को नमस्कार *

तत्वार्थ सार्धं त्व दर्शनेत्व,

मल निमुक्त सम्यक्त्व शुद ।

ज्ञान गुण चरणस्य शुद्धस्य वीर्यं,

नमामि नित्य शुद्धाम तत्व ॥८॥

पच्चिस मलमे रहित शुद,

सम्यक्त्व तत्व श्रद्धान धरो।

ज्ञान चरित शक्ती के धारी,

चेतन की पहिचान करो ॥

ऐसे शुद्धातम को नितही,

नमस्कार मैं करता हूं।

उस चेतन के शुद्धभाव की,

सदा भावना धरता हूं ॥८॥

* जिनवाणी महिमा *

जे सप्त तत्त्व पद् द्रव्य युक्त,
पदार्थ काया गुण चेत नेत्व ।
त्रिश प्रकाश तत्त्वानि वेद,
श्रुत देव देव शुद्धात्म तत्त्व ॥१०॥

सप्त तत्व नव पदार्थ वा पद-
द्रव्य कहे जिन आगम में ।
इनका प्रकाश जो करता है,
वेद वही परमागम में ॥

ऐसे श्रुत देवाधि देव जो,
जिन वाणी सद् ज्ञान मयी ।
श्री गुरु तारण तरण कहे, यह,
करो शुद्ध श्रद्धान सही ॥१०॥

* माला-गुथन *
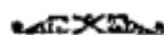
देव गुरु शास्त्र गुणानि नित्य,
सिद्ध गुण सोलह कारणेत्व ।
धर्म गुण दर्शन ज्ञान चरण,
मालाय गुथित गुण सस्य रूप ॥११॥
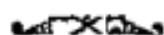
सच्चे देव शास्त्र गुरु के गुण,
नित्य मनन करना चहिये ।
सिद्धों के गुण तथा भावना-
सोलह चित धरना चहिये ॥

जैन धर्म के गुण सद्दर्शन,
ज्ञान चरण मय भावों को ।
अब गुथन गुणमाला मे,
करते हैं शुद्ध सुभावों को ॥११॥

* गाथा-गुण *

[illegible] पेप,
व्रतानि शील तपदान चिन्त ।
[illegible] ज्ञान चारित्र,
सुदर्शन शुद्ध मल विमुक्त ॥१२॥

ग्यारह पडिमा नाम प्रतिज्ञा का,
है धारो हे भ्राता ।
शील तथा तपदान व्रतादिक,
चिन्तन करो मिले साता ॥

सम्यग्दर्शन ज्ञान चरण,
आचरण सदा करना चहिये ।
पच्चिस मल से रहित शुद्ध,
भावों को अब धरना चहिये ॥१२॥

सम्यग्दृष्टि-कर्त्तव्य

मूल गुण पालति जे विशुद्ध,
शुद्ध मय निर्मल दर्शन।
ज्ञान मय शुद्ध धरति चित्त,
ते शुद्ध दृष्टी शुद्धात्म [illegible]॥

अष्टमूल गुण का पालन जो,
करते निर्मल [illegible] में।
ज्ञानमयी निज शुद्ध दृष्टि,
वे युक्त रहें [illegible] में॥

आतम शुद्ध करो हो भाई,
जिनवाणी में यही कहा।
सम्यग्दर्शन हुआ जिन्हों को,
उनही ने [illegible] मोक्ष लहा॥

ॐ पच्चीस-मल ॐ

शकादि दोष मद मान मुक्त,
मूढ़ त्रय मिथ्या माया न दृष्ट ।
अज्ञान षट् कर्म मल पच वमि,
त्यक्तस्य ज्ञानी मल कर्म मुक्त ॥१४॥

शकादिक हैं आठ दोष,
ज्ञानादिक कहे आठ मद हैं ।
तीन मूढ़ता रहित तथा षट्,
अनायतन जो दुखदा हैं ॥
ऐसे यह पच्चीस दोष,
सम्यक्त्व धर्म के तुम तजना ।
अष्ट कर्म से रहित होय,
ज्ञानीजन शिवपद को भजना ॥१४॥

शुद्धात्म श्रद्धान

शुद्ध प्रकाश शुद्धात्म तत्व,
समस्त संकल्प विकल्प मुक्त ।
रत्नत्रय लक्षत मस्य रूप,
तत्वार्थ सार्धं बहु भक्ति युक्त ॥१५॥

शुद्धातम का वह प्रकाश है,
नहिं संकल्प विकल्प जहां ।
रत्नत्रय शोभायमान है,
पूर्ण रूप से शुद्ध जहां ॥

तत्वों का श्रद्धान करो,
बहु भक्ति सहित भविजन ज्ञानी ।
श्री गुरु तारण तरण करें -
उपदेश शुद्ध आतम ध्यानी ॥१५॥

* श्रद्धान की सफलता *

ये [illegible] लीना गुण [illegible] नेत्र
ते दु ख हीना जिन शुद्ध दृष्टि ।
सम्योपि तत्व सोई ज्ञान रूप,
व्रजति मोक्ष क्षण एक मेत्व ॥१६॥

धर्मलीन गुण हो चेतन के,
जो जन आराधन करते।
शुद्ध दृष्टि दुख हीन वही नर,
तत्वज्ञान धन को धरते॥

ऐसे भाव हुए जिनके,
वे शीघ्र मोक्ष पद पाते हैं।
श्री गुरु तारण तरण धन्य,
यह शुभ उपदेश सुनाते हैं॥१६॥

* सम्यक्त्व-महिमा *

जे शुद्ध दृष्टी सम्यक्त्व शुद्ध,
माला गुण कंठ हृदय रुलित ।
तत्वार्थ सार्धं च करोति नित्य,
संसार मुक्त शिव सौख्य वीर्य ॥१७॥

हृदय कंठ में इस गुण माला—
को जिनने धारण करली ।
भव सागर से पार हुए वे,
उनने शिव रमणी वरली ॥

तत्वमयी श्रद्धान जिन्हों के,
हृदय कंठ में रुलता है ।
उनके लिये मुक्ति मंदिर का,
द्वार शीघ्र ही खुलता है ॥१७॥

❀ ज्ञान गुण माला ❀

ज्ञान गुण माल सु निर्मलेत्व,
सद्येप गुथित तत्र गुण अनत ।
रत्नत्रय लङ्कृत निश्र रूप,
तत्वार्थ सार्ध कथित जिनेन्द्र ॥१८॥

ज्ञान गुण मयी निर्मल माला,
का गुथन सक्षिप्त किया ।
तीन रत्न शोभित हैं इसके,
धारण से हो दिप्त हिया ॥

जैसा कथन जिनेन्द्र देव ने,
किया शुद्ध जिनवाणी में ।
वही कथन श्री गुरु तारण–
स्वामी ने किया सुवाणी में ॥१८॥

* राजा श्रेणिक का प्रश्न *

श्रेणीय पृच्छन्ति श्री वीर नाथ,
माला श्रिय मागत नेह चक्र।
धरणेन्द्र इन्द्र गन्धर्व जच,
नर नाह चक्र निद्या धरेत्व ॥१६॥

वीरनाथ के समवशरण में,
राजा श्रेणिक ने बूझा।
भगवन! कहो कौन इस माला–
का धारी होगा दूजा॥

चक्रवर्ति धरणेन्द्र इन्द्र,
गन्धर्व यच्च नरनाथ वडे।
विद्याधर का समूह देखा,
श्रेणिक विस्मय साथ-खड़े॥१६॥

राजा श्रेणिक के प्रश्न का
—समाधान—

(गाना नम्बर १६)

तब श्री गौतम स्वामी ने,
राजा श्रेणिक को सम्बोधा।
क्या सुरनर की विभूति मे ही,
तुमने शिव मारग शोधा॥

हे श्रेणिक! तुमही इस माला,
के अधिकारी हो ज्ञानी।
चौथेकाल आदि मे धारोगे,
तीर्थंकर पद ध्यानी॥१६॥

* बाह्य विभूतियों की असारता *

किं दिप्त रत्न बहु वे अनन्त,
किं धन अनन्त बहुभेय युक्त ।
किं त्यक्त राज्य वनवास छेत्व,
किं तत्व वेत्व बहु वे अनत ॥२०॥

दीप्त रत्न राशी बहुती इनसे,
क्या काज सफल होगा ।
धन अनंत बहु भांति कहो,
इनसे क्या काज सफल होगा ॥

राज्य छोड वनवास लिया,
इससे क्या काम सफल होगा ।
तत्व ज्ञान कर लिया कहो,
इससे क्या काज सफल होगा॥२०॥

* सम्यक्त्व माला *

श्री वीरनाथ उक्त च शुद्ध,
श्रुणु श्रेणि राया माला गुणार्थं ।
किं रत्न किं अर्थ किं राज नार्थं,
किं तत्व वेत्व नवमाल दृष्ट ॥२१॥

वीर नाथ की दिव्य धुनी में,
देखो क्या उपदेश हुआ ।
सुन श्रेणिक! माला गुण को,
अब जो तुमको संदेह हुआ ॥

रत्न अर्थ धन राज सपदा,
तप तपने से क्या होगा ।
यदि इस माला को नाहिं देखा,
तो सबही निष्फल होगा ॥२१॥

* सम्यक्त्व विना-बाह्य विभूतियां निष्प्रयोजन हैं *

किं रत्न कार्यं बहुने अनन,
किं अर्थ अर्थ नहिं कोपि कार्यं ।
किं राज चक्र किं काम रूप,
किं तत्व वेत्त बिन शुद्ध दृष्टी ॥२२॥

सम्यग्दर्शन नाहिं होगा तो,
रत्न अर्थ नाहिं काम पड़ें ।
राज चक्र क्या काम रूप भी,
तत्वज्ञान सब नाम बड़े ॥

हे श्रेणिक ! अब आत्म तत्व,
का शरणा ही लेना चहिये ।
श्री गुरु कहें सुनो हो प्राणी,
निज पद चित देना चहिये॥२२॥

चक्रवर्ति धरणेन्द्र इन्द्र,
गन्धर्व यक्ष नाना भाती।
धन सपदा अनंत इन्द्रों के,
साथ लगी यह दुख पाती॥

नहिं देखी सम्यग्दर्शन की
माला सुखदाई इनने।
श्रेणिक तुमको इस माला का,
होगा लाभ एक छिनमें॥२३॥

* शुद्ध-मालारोहण *

जे शुद्ध दृष्टी सम्यक्त्व जुक्त,
जिन उक्त सत्य तत्वार्थ सार्धं ।
आशा भय लोभ स्नेह त्यक्त,
ते माल दृष्ट हृदि कठ रुलित ॥२४॥

सम्यग्दर्शन सहित शुद्ध दृष्टी,
जिनोक्त श्रद्धान धरो ।
आशा स्नेह लोभ भय त्यागो,
निजपद की पहिचान करो ॥

ऐसे भाव हुये जिनके,
उनने इस माला को पहिरी ।
निशदिन रुलन रहे तत्वों की,
वही पायगे शिव दहरी ॥२४॥

* सम्यग्दष्टि को मोक्ष हो *

जिनस्य उक्त जे शुद्ध दृष्टी,
सम्यक्त्व धारी बहु गुण समाधिं।
ते माल दृष्ट हृदि कंठ रुलित,
मुक्ते प्रवेश कथित जिनेन्द्र ॥२५॥

जिनेन्द्र वचनानुसार जो हैं,
शुद्ध दृष्टि बहु गुणधारी।
उनने देखी यह गुणमाला,
सुनो भव्य श्रद्धा धारी ॥
ऐसे भाव हुए जिनके,
उनने इस माला को पहरी ॥
निशदिन रुलन रहे तत्वों की,
वही पायंगे शिव दहरी ॥२५॥

* शुद्ध मम्यक्त्वी *

सम्यक्त्व शुद्ध मिथ्या निरक्त,
लाज भय गारव जीत त्यक्त ।
ते माल दृष्ट हृदि कठ रलित,
मुक्तस्य गामी जिनदेव कथित ॥२६॥

सम्यग्दर्शन से पवित्र हो,
मिथ्या त्याग करो प्राणी ।
लज्जा भय गारव को त्यागो,
माला देखो सुखदानी ॥

हृदय कठ में रुलन करो तब,
पाओगे तुम शिव रमणी ।
जिनेन्द्र ने यह कहा भव्यजन,
सुनकर पावो शिव श्रयणी ॥२६॥

* रत्नाय धारी *

[illegible] चारित्र शुद्ध,
मिथ्यात्व रागादि असत्य च त्यक्त ।
[illegible] हृदि कंठ रुलित,
मम्यक्त्व शुद्ध कर्म विमुक्त ॥२७॥

[illegible]दर्शन ज्ञान चरित से,
तुम पवित्र होना ज्ञानी ।
मिथ्या राग असत्य आदि से,
तुम विरक्त होना ध्यानी ॥

ऐसे भाव हुये जिनके,
उनने यह माला को पहरी ।
निशादिन रुलन रहे तत्वों की,
वही पायगे शिव दहरी ॥२७॥

* धर्मध्यान-युक्त भव्य *

पादस्थ पिंडस्थ रूपस्थ चित्त,
रूपा अतीत जे ध्यान युक्त।
आर्त च रौद्र भय मान त्यक्त,
ते माल दृष्ट हृदि कंठ रुलित ॥२८॥

धर्म शुक्ल अरु आर्त रौद्र,
ध्यानों के भेद सुनो भाई।
धर्म शुक्ल अन्तर्गत ही–
है चार और ये सुखदाई॥

है पदस्थ पिंडस्थ रूप,
रूपस्थ तीन तो ये सुनलो।
चौथा रूपातीत ध्यान यह,
इसे ध्यान से तुम गुनलो ॥२८॥

* धर्म ध्यानी *

(गाथा नम्बर २८)

आर्तरौद्र को छोड जिन्होंने,
धर्म शुक्ल स्वीकार किया।
इस गुणमाला को उनने ही,
शुद्ध हृदय में धार लिया॥

विशेष इन ध्यानों का जिन–
आगम से ज्ञान करो भाई।
श्री गुरु ने यह कथन किया है,
भविजन को शिव सुखदाई॥२८॥

* सम्यक्त्व भेद *

आज्ञा सुवेद उपशम धरेत्व,
चायिक शुद्ध जिन उक्त सार्धं ।
मिथ्या त्रिभेद मलराग खड
ते माल दृष्ट हृदि कंठ रुलित ॥२९॥

आज्ञा, वेदक, उपशम क्षायिक,
यह समिकित के भेद कहे।
त्रिभेद मिथ्या पचीस मलको,
त्याग, माल, कर माहि गहे॥

ऐसे भाव हुए जिनके,
उनने इस माला को पहरी।
निशदिन रुलन रहे तत्वों की,
वही पांयगे शिर दहरी ॥२६॥

* जड़ता को त्यागो *

ये चेतना लक्षणो चेत नेत्व,
अनेक विनाशी असत्य च स्यक्त ।
जिन उक्त सत्य सु [illegible],
ने मा[illegible] दृष्ट हृदि कठ रुलित ॥३०॥

जो शुद्धातम चेतन के,
लक्षण को जान सचेत हुए ।
विनाशीक पद जो असत्य है,
जड़मय जान सचेत हुए ॥

तातें जडतें भिन्न लखो,
निज आतम को चेतन ज्ञानी ।
देखो गुणमाला को धारो,
रुलन करो मनमें ध्यानी ॥३०॥

* सम्यग्दृष्टि सुखी हो *

ये शुद्ध बुद्धस्य गुण सस्य रूप,
रागादि दोष मल पुंज त्यक्त।
जे धर्म प्रकाश मुक्ते प्रवेश,
ते माल दृष्ट हृदि कंठ रुलित ॥३१॥

शुद्ध बुद्ध गुण स्वरूप जिसने,
ज्ञान रूप पद जान लिया।
राग द्वेष आदिक मल पुंजों,
को उसने सब त्याग दिया॥

जो जन ऐसे धर्म प्रकाशक,
उनने यह माला हेरी।
निशदिन रुलन रहे तत्वों में
वही पावे ॥३१॥

* इस माला रोहण का प्रताप *

जे सिद्ध नत मुक्ते प्रवेश,
शुद्ध स्वरूप गुणमाल गुथित ।
जे कोपि भव्यात्म मम्यक्त्व शुद्ध,
ते याति मोक्ष कथित जिनेन्द्र ॥३२॥

जीव सिद्ध जो हुये अनंतानंत,
मुक्ति पद को पाया ।
शुद्ध स्वरूप मयी गुणमाला,
गुंथन कर शिवपद पाया ॥

जो जन भव्य शुद्ध सम्यग्दर्शन,
को अवश्य धारेंगे ।
प्राप्त करेंगे शिवपद को,
वे जीवों को भी तारेंगे ॥३२॥

* उपसहार *

(गाथा नम्बर ३२)

ऐसे भाव हुए जिनके,
उनने इस माला को पहरी।
निशदिन रत्न रहे तत्वों की.
वही पावेंगे शिव दहरी ॥
श्री माल रोहण की भी यह
भाषा टीका पद्य मयी।
यसमती लघु बालक की,
यह प्रथम कृती परिपूर्ण हुई ॥३२॥

श्री कमल-बत्तीसी ।

॥ नस्मै श्री गुरवे नम ॥

श्री १००८ श्री परमगुरु तारण तरण मडलाचार्य विरचित

कमल-वत्तीसी

❀ मंगलाचरण ❀

तत्त्व च परम तत्त्व,
परमप्पा परम भाव दर्शीए।
परम जिन' परमेष्ठी
नमाम्यहं परम देव देवस्य ॥१॥

तत्त्वों में जो परम तत्त्व है,
नमस्कार उसको करना।
परमोत्कृष्ट भाव दर्शी,
परमातम पद वदन करना ॥
परम जिनं परमेष्ठी को,
श्री नमस्कार मैं करता हू।
जो उत्कृष्ट देव देवों के,
उन्हें वदना करता हूं ॥१॥

* जिनवाणी श्रद्धान *

जिन वयन सद्दहन,
कमल श्री कमर भाव उवचन्न।
अरजर भाव स उत्त,
ईर्जं समभाव मुक्ति गमन च ॥२॥

कमल वत्तीसी ग्रन्थ वनाया,
भव्य जीव सबोधन हेत।
श्री गुरु सबोधन करते हैं,
इस गाथा में आतम हेत॥

सुनो भव्य जीवो जिन आज्ञा,
भावों को निर्मल करलो।
सम भावों मे मुक्ति गमन है,
यह निश्चय मन मे धरलो॥२॥

* सम्यग्ज्ञान-महिमा *

अन्मोय ज्ञान सहाव
रयन रयन सरूव निमल ज्ञानस्य ।
निमल निमल सहाव,
ज्ञान अन्मोय सिद्धि सपत्त ॥३॥

ज्ञान मयी शुद्धातम में ही,
नित प्रति आनन्दित होना।
ज्ञान रत्न के प्रकाश में ही,
निज स्वरूप को तुम [illegible] ॥ ॥

विमल स्वभाव ज्ञान का,
इस में जो जन [illegible] गया ।
सिद्धि सपदा को पाकर,
भव [illegible] में सातें ॥२॥ [illegible] ॥

* मिथ्यात्व त्याग का उपदेश *

जिनयति मिथ्या भाव,
अनृत असत्य प्रजाव गलिय च ।
गलयति कुज्ञान स्वभाव
विलय कम्मान तिविह जोयेना ॥४॥

मिथ्या भावों को जो जीते,
असत्य पर्जय बुद्धि तजें ।
कुज्ञानों को त्याग भव्य वे,
भेद ज्ञान को नित्य भजें ॥

ऐसे सम्यग्दृष्टि जीव ही,
त्रिविधि कर्म को दूर करें ।
निज गुण सपत्ती को पाकर,
शिव रमणी को शीघ्र वरें ॥४॥

* सम्यग्ज्ञानी का प्रयत्न *

नन्द अनद रूव,
चेयन आनन्द मनाव गलिय च।
ज्ञानेन ज्ञान अमोय
अन्मोय नान कम्म गलिय च ॥४॥

नन्द तथा आनन्द रूप वा,
चिदानन्द जिनने पाया।
उनकी पर्जय बुद्धि दूर हुई,
ज्ञानानन्द सदा मग्न ॥

उनके कर्म गले सबही,
धनि धन्य मोक्षपद को पाया।
श्री गुरु तारण तरण मंडला-
चारज ने यह [illegible] ॥४॥

* सम्यग्ज्ञानी की कर्म निर्जरा *

कम्म सहावं खिपनं,
उत्पत्ति खिपिय दृष्टि सभाव ।
चेयनि रूव संजुत्तं,
गलिय विलयंति कम्म बधान ॥६॥

संचित कर्म खिपाय नया जो,
बंध कर्म का नहिं करते ।
सम भावों मय दृष्टि जिन्हों की,
निज चेतन अनुभव करते ॥

कर्मों के बंधन ऐसे से,
उनके सबही खुल जाते ।
निकट भव्य वे जांय शीघ्र ही,
क्षण में शिव सुख को पाते ॥६॥

❀ मनको वश करना ❀

मन स्वभाव स खिपन,
ससारे शरण भाव खिपियेन ।
ज्ञान वलेन विशुद्ध,
अन्मोय निमल मुक्ति गमन च ॥७॥

मन का चचल जो स्वभाव है,
उसको शीघ्र खिपा देना ।
सांसारिक पद्धति वर्धक,
भावों को आप मिटा देना ॥

ज्ञान वलेन विशुद्ध करो,
मन आनन्दित हे सद्दृष्टी ।
मुक्ति गमन का कारण है,
यह भाव धरो सम्यग्दृष्टी ॥७॥

* वैराग्य तीन तरह से होता है *

वैराग्य तिविह उवन्न,
जन रंजन राग भाव गलिय च ।
कल रंजन दोष विमुक्त,
मन रंजन गारवेन तिक्त च ॥८॥

तीन तरह उत्पन्न करो,
वैराग्य हृदय में हे ध्यानी ।
जन रंजन जो राग भाव है,
उसे दूर कर दो ज्ञानी ॥

कल रंजन जो शरीर का है,
दोष उसे त्यागो भाई ।
मन रंजन गारव को त्यागो,
यही सीख है सुखदाई ॥८॥

* दर्शन मोह छोड़ो *

दर्शन मोहन्ध विमुक्त,
राग द्वप च विषय गलिय च।
ममल स्वभाव उवन्न,
नंत चतुष्टय दृष्टि सदर्श ॥६॥

दर्शन मोह अंध कर देता,
जीवों को, उसको छोड़ो।
राग द्वेष अर विषय तथा,
क्रोधादिक भावों को तोड़ो ॥
जिनके ऐसा भाव हुआ,
उत्पन्न शुद्ध अन्तर्यामी।
नंत चतुष्टय देख आपमें,
वही हुये शुभ शिव गामी ॥६॥

* सम्यग्ज्ञानी को मोक्ष हो *

ति ग्रर्थ शुद्ध दृष्ट
पचार्थ पच ज्ञान परमेष्ठी।
पचाचार सुचरण,
सम्यक्त्व शुद्ध ज्ञान आचरण ॥१०॥

रत्नत्रय ही शुद्ध अर्थ है,
पच ज्ञान परमेष्ठि मयी।
पंचाचार विचार शुद्ध,
सम्यक्त्व और सद्ज्ञान मयी॥

ऐसे भाव हुये जिनके,
वे शीघ्र मोत्त पद पाते हैं।
श्री गुरु तारण तरण मडला-
चारज यह समझाते हैं ॥१०॥

✽ भव्यजीवों के कर्तव्य ✽

दर्शन ज्ञान सुचरण,
देव च परम देव शुद्ध च।
गुरुश्च परम गुरुत्व
धर्म च परम धर्म सद्भाव ॥१॥

सम्यग्दर्शन तथा ज्ञान चारित्र,
भले धारण करलो।
सच्चे देव गुरू पर भाई,
दृढ़ श्रद्धान पूर्ण करलो ॥

परम धर्म जो जैन धर्म है,
जिनेन्द्र ने जिसको गाया।
उसको धारण किया जिन्होंने,
सद्दृष्टि पद को पाया ॥

* केवल ज्ञानी - महिमा *

जिनय च परम जिनय,
गान पचामि अचर जोय।
ज्ञानेन ज्ञान वृद्ध,
विमल महावीर सिद्धि सपत्त ॥१२॥

अष्ट कर्म को जीत प्रभूजी,
केवल ज्ञानी पूर्ण हुये।
ज्ञान वृद्ध जो शुद्ध स्वभावी,
असरीरी सुख पूर्ण हुये ॥

उनके कर्म गले सबही,
धनि धन्य मोक्ष पद को पाया।
श्री गुरु तारण तरण मंडला
चारज ने यह दरशाया ॥१२॥

* आध्यात्मिक चिन्तवन *

चिदानन्द　　चिंतवन,
　　चेयन आनन्द सहाव आनन्द।
कम्म मल पयडि खिपन,
　　विमल सहावेन अन्मोय मयुक्त ॥१३॥

चिदानन्द शुद्धातम पद है,
　　जो अथाह आनन्द मयी।
उसका चिंतन करो भव्यजन,
　　जिससे पावो मोक्ष मही॥

शत ऊपर अड़तालिस प्रकृति,
　　कर्मों की जो दुखदाई।
उन्हें खिपाओ स्वरूप ध्याओ,
　　तब पद पाओ सुखदाई ॥१३॥

* भेद ज्ञानी-सम्यग्दृष्टि *

अप्पा पर पिच्छन्तो,
पर परजाव शल्य मुक्तान।
[illegible] सहाव शुद्ध,
शुद्ध चरणस्य अन्मोय सयुक्त ॥१४॥

आत्मा पर की पिछान करता,
पर परजाय शल्य से दूर।
[illegible] स्वभावी शुद्ध आचरण,
सहित तथा जो है सुखपूर ॥

ऐसा सम्यक्त्वी जो होवे,
वही मोक्ष पद को पावे।
कृत कृत्य कहावे, निज गुण भावे,
जग में फिर वह नाहिं आवे ॥१४॥

* जिनवचन शक्ति *

जिन वयन च सहाव,
जिनयति मिथ्यात्त्र कषाय कमान ।
अप्पा शुध मप्पान,
परमप्पा विमल दर्शये शुद्ध ॥१६॥
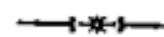
जिनवर वचन सहाय जिन्हों के,
उनके मिथ्या भाव टरें।
कषाय त्यागें वे ही जग में,
कर्म पटल संहार करें ॥

शुद्ध करें निज आतम को,
वे परम
उनके पद कमलों

❀ इष्ट-दृष्टी ❀

जिन दृष्टि इष्ट सशुद्ध,
इष्ट सज़ोय तिक्त आनिष्ट।
इष्ट च इष्ट रूनं,
ज्ञान सहावेन कर्म सारिपनं ॥१७॥

इष्ट शुद्ध दृष्टि जिनवर सम,
जिन जीवों ने प्राप्त करी।
उनको इष्ट मिला उनकी ही,
अनिष्टता मय दृष्टि टरी॥

इष्ट कहो या अभीष्ट पदको,
उनने प्राप्त किया भाई।
ज्ञान स्वभाव धार निज में,
कर्मों से खूब विजय पाई॥१७॥

* सम्यग्ज्ञानी की लगन *
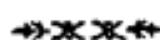
अज्ञान नहिं दिट्ठ,
ज्ञान सहावेन अन्मोय विमल चा ।
ज्ञानतर नहिं दिट्ठ,
पर परजाव दिट्ठि अतर सहसा ॥१८॥

नहिं देखे अज्ञान भाव को,
ज्ञान भाव में मगन रहे ।
अंतर नहिं जिनके सुज्ञान में,
अन्तरग में लगन रहे ॥

पर परजाय बुद्धि नहिं जिनके,
घट में कभी उदय होवे ।
सम्यकवन्त जीव है सोई,
जन्म जरा दुख को खोवे ॥१८॥

* आतम चिन्तवन *

अप्पा अप्प सहाव,
अप्पा शुद्धप्प विमल परमप्पा।
परम सरूव रूव
रूवा तिक्त च विमल ज्ञान च ॥१६॥

निज में निज का स्वभाव देखे,
जो परमातम रूप कह्य।
परम स्वरूप रूप है सोई,
विमल ज्ञान मय शुद्ध अह्य ॥

पुद्गल रूप त्याग करके,
निज में ही दृष्टि [illegible] लेना ।
श्री गुरु का कहना है [illegible],
इस पर ध्यान [illegible] देना ॥१६॥

* भेदज्ञान शिक्षा *

विमल विमल सरूव,
ज्ञान विज्ञान ज्ञान सहकार।
जिन उक्त जिन वयन,
जिन सहकारेण मुक्ति गमन च ॥२०॥

परम शुद्ध जो विमल स्वरूपी,
ज्ञानों में विज्ञान धरे।
जिनवर के शुभ वचन धार वह,
मुक्ति रमा को शीघ्र वरे।

पुद्गल रूप त्याग करके,
निज में ही दृष्टि लगा लेना।
श्री गुरु का कहना है भाई,
इस पर ध्यान सदा देना ॥२०॥

* मैत्री आदि भावना *

पद् काई जीवान,
कृपा सहकार निमल भावेन।
मतो जीव समान
कृपा सहकार विमल रलिष्ट जीवान ॥२१॥

पृथ्वी जल अग्नी वायू अरु,
वनस्पती त्रस पद् काई।
जीवों पर निर्मल भावों से,
करुणा कृपा करो भाई॥

चार भावनाओं में पहिली,
मैत्रि भावना सुखदाई।
अब आगे मध्यस्थ भावना—
का वर्णन करते भाई ॥२१॥

* माध्यस्थ भावना *

एक्रांत त्रिप्रिय दिष्ठ,
मध्यस्थ विमल शुद्ध समात्र ।
शुद्ध सहाय उक्तं,
विमल दिष्टी च कम्म खिपन ॥२२॥

हठग्राही एकांत तथा,
विपरीत मार्ग पर जो चलते ।
उन पर भी मध्यस्थ भाव,
धर लीजे कर्म सभी गलते ॥

शुद्ध दृष्टि का विमल भाव यह,
कर्म खिपाने का कारण ।
धारण करलो मित्रो इसको,
कहते हैं श्री गुरु तारण ॥२२॥

* कृपापरत्व-भावना *

सव कलिट्ठ जीवान,
अन्मोय सहकार दुग्गय पत्त।
जे निरोह सभाव,
ससारे शरण दुःख मोयमी ॥२३॥

दुखी जीव को देख दुष्ट जो,
आनन्दित होते मन में।
दुर्गति पात्र विरोध भाव मय,
वे फिरते हैं भव वन में॥

ऐसे भाव त्याग दुख दाता,
शुभ भावों को तुम पालो।
दुखियों के दुख में दुखी हो,
उदार भावों को ध्यालो ॥२३॥

* सम्यग्ज्ञान-महिमा *

ज्ञान सहार सुसमय,
अन्मोय विमल ज्ञान सहकारं।
ज्ञान ज्ञान मरूव,
ज्ञान अन्मोय सिद्धि सपत्त ॥२४॥

शुद्ध समय यह ज्ञान स्वभावी,
विमल सुक्ख का ले शरणा।
ज्ञान मयी निज शुद्ध रूप में,
ज्ञानानन्द लखा करना॥

सिद्धि सपदा मिलती ऐसे,
भावों से निश्चय धरना।
श्री जिन तारण तरण गुरू का,
यह उपदेश मनन करना ॥२४॥

❀ परम इष्ट ❀

इष्ट च परम इष्ट,
इष्ट अन्मोय तिक्त अनिष्ट ।
पर परजाय तिलिय,
ज्ञान सहावेन कम जिनय च ॥२५॥

परमोत्कृष्ट इष्ट सुख मय,
परमातम पद अनुभव करना ।
अनिष्ट पर पर्जाय त्याग निज,
ज्ञान सम्पदा दृढ धरना ॥

सिद्धि सपदा मिलती ऐसे,
भावों से निश्चय धरना ।
श्री जिन तारण तरण गुरू का,
यह उपदेश मनन करना ॥२५॥

* जिनेन्द्र वचन *

जिन वयन सुध शुद्ध,
अन्मोयं विमल शुद्ध सहकार।
विमल विमल सरूव,
ज रयण रयण सरुत्र समिलिय ॥२६॥

जिनवर वचन शुद्ध है उनमें,
आनन्दित होना ज्ञानी।
जिससे विमल शुद्ध रत्नत्रय,
स्वरूप मिल जावे ध्यानी॥

सिद्धि सपदा मिलती ऐसे,
भावों से निश्चय धरना।
श्री जिन तारण तरण गुरू का,
यह उपदेश मनन करना॥२६॥

* उपसंहार *

श्रेष्ठ च गुण उतन्न
श्रेष्ठ सहकार कम्म सरिपन।
श्रेष्ठ च इष्ट रूव
कमल श्री कमल भाव विमल च ॥२७॥

श्रेष्ठ गुणों को हृदय मांही,
उत्पन्न करो स्वीकार करो।
कर्म चय कर श्रेष्ठ इष्ट की,
प्राप्ति करो भव पार तरो।

भव्य जीव ऐसे तुम अपने,
हृदय कमल में भाव भरो।
जिससे यह संसार भवोदधि,
माहि सेति तुम शीघ्र तरो ॥२७॥

❁ जिनवाणी महत्त्व ❁

जिन वयन सहकार,
मिथ्या कुज्ञान शल्य तिक्त च।
विक्त कषाय विलिय,
ज्ञान अन्मोय कम्म गलिय च ॥२८।

जिन वचनों के सहाय से,
मिथ्या कुज्ञान शल्य त्यागो।
विलय जाय सबही कषाय,
भावों यही मार्ग लागो॥

सिद्धि सपदा मिलती ऐसे,
भावों से निश्चय धरना।
श्री जिन तारण तरण गुरू का,
यह उपदेश मनन करना ॥२८॥

पद् कमल

कमल कमल सहाव,
पद् कमलति अर्थ निमल आनन्द ।
दर्शन ज्ञान सुचरण,
अणमोय कम सखिपन ॥२६॥

पद् कमलों मय शरीर में ही,
आत्म प्रदेश रहें भारी ।
विंदु पद्म है, कठ पद्म,
हृदि पद्म नाभि का सुख धारी ॥

गुह्य कमल, पद पद्म कहीं,
यह बतलाते पद् कमल सही ।
इन कमलों पर विराजते हैं,
आत्म देव शिव सौख्य मयी ॥२६॥

❀ पद कमल - सफलता ❀

(गाथा नं॰ २६)

कमल स्वभाव कहें शुद्धातम,
भावों को निज ज्ञान मयी।
तीन अर्थ रत्नत्रय का,
सुख दर्शन ज्ञान चारित्र मयी॥

ऐसे गुण मय आत्म सूर्य का,
उदय होय जब निज ज्ञानी।
तब ये होंय प्रफुल्लित सबही,
कमल जानलो श्रद्धानी॥
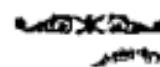
❀ भेद - ज्ञान - प्रभाव ❀

ससार शरण नहिं दिट्ठ,
नहिं दिट्ठ समल प्रजाव सभाय।
ज्ञान कमल सहाव,
ज्ञान विज्ञान कमल अन्मोय ॥३०॥

अशरण है संसार भवोदधि,
देह रूप सबको भाया।
मलीन देही से नाहिं जाता,
ममत्व देखो दुख दाया॥

शुद्ध ज्ञान मय भेद विज्ञानी,
ध्यान सूर्य का उदय करो।
तब प्रफुल्ल यह सभी कमल,
होंय यह मन में श्रद्धान धरो॥३०॥

* श्रद्धान की सफलता *

जिन उक्त सद्दहन,
अप्पा परमप्प शुद्ध विमल च।
परप्पा उवलन्ध,
परम सुभावेन कम्म बिलयति ॥२१॥

जिनवर का उपदेश तथा,
शुद्धात्मा का श्रद्धान धरो।
जिससे परमातम पद की,
हो प्राप्ति यही पहिचान करो॥

परम शुद्ध सद्भावों से,
तुम कर्मों पर ही विजय करो।
श्री गुरु तारण तरण जिनेश्वर,
की कथनी स्वीकार करो॥२१॥

* उपसंहार *

जिन दिट्ठि उत्त सुद्ध,
जिनयति कम्मान तिविह जोयेन ।
ज्ञान अन्मोय सिद्धान,
विमल सरूव च मुक्ति गमन च ॥३२॥

जिनवर ने अपनी दृष्टी में,
जो कुछ देखा जाना है।
वही शुद्ध उपदेश भव्य जन,
हेतू यहां बखाना है॥

मन वच काय त्रिविधि योगों से,
कर्म समूह दूर करता।
शुद्ध ज्ञान मय निज स्वरूप में,
रमकर शिव पद को धरता ॥३

* श्रद्धान की सफलता *

जिन उक्त सद्दहन,
अप्पा परमप्प शुद्ध निमल च।
परपप्पा उवलन्ध,
परम सुभावेन कम्म विलयति ॥३१॥

जिनवर का उपदेश तथा,
शुद्धात्मा का श्रद्धान धरो।
जिससे परमातम पद की,
हो प्राप्ति यही पहिचान करो॥

परम शुद्ध सद्भावों से,
तुम कर्मों पर ही विजय करो।
श्री गुरु तारण तरण जिनेश्वर,
की कथनी स्वीकार करो॥३१॥

• उपसंहार •

जिन दिट्ठि उत्त सुद्ध,
जिनपति कम्मान तिविह जोयेन।
ज्ञान अन्मोय विन्नान,
विमल सरूव च मुक्ति गमन च ॥३२॥

जिनवर ने अपनी दृष्टी में,
जो कुछ देखा जाना है।
वही शुद्ध उपदेश भव्य जन,
हेतू यहा वखाना है॥

मन वच काय त्रिविधि योगों से,
कर्म समूह दूर करना।
शुद्ध ज्ञान मय निज स्वरूप में,
रमकर शिव पद को भरना ॥३२॥

॥ दोहा ॥

कमल वत्तीसी ग्रंथ यह, बत्तिस गाथा मांय।
निज पर हित भाषा करी, श्री गुरु के पद ध्याय ॥१॥
अत्तर लघु दीरघ कहीं, कहीं अर्थ की भूल।
सज्जन जन कीजे क्षमा, जो होवे प्रतिकूल ॥२॥
तथा सुधारो ग्रंथ को, जिन आगम अनुकूल।
पढो पढावो भव्य जन तो पावो भवकूल ॥३॥

* इति श्री कमल वत्तीसी *

केम्प—
चाद (छिन्दवाड़ा)
ता० ११-१२-३८

जिनवाणी भक्तों का दास—
ब्र० जय कुमार